

Suresh Chaudhary - Bhopal -

12 मई 1979

सुरेश -

तुम्हारे दोनों पत्र मिले ।

ये दो शब्द जान्ती मैं लिख रहा हूँ,
कि तुम्हें गालियाँ ले सकें कि इन्हें पाका
मुझें इतनीमान मिले, यही जान्ती कि
मेरे विचारों से तुम्हें कुछ सहारा मिले ।

मैं भी तुम्हें क्यों नहीं लिखा कि तुम्हारी पीड़ा
किस वातवरण, किस कारण प्रस्तुत हुई ।
महारा लिखो ।

जब धार्मिक प्रेरणाएँ रुक रही हैं बुद्धि का महारा
बैठा पड़ता है । परन्तु विश्वास है कि बुद्धि, तब
तुच्छ है, भाँके सब श्रेष्ठ ।

तुम्हारा,

(स)

"जमान पक रही है", मिला / छुटा प्रकार है /
चयनाद ।

उम्मीद थी आप दो शब्द लिखेंगे -
कम से कम "मिल" किजिएंगे ।

बहरेहाल -

30 फ्रेन्ड्स का भनी आउट भेज रहा हूँ । अद्विजन करीब
20 हफ्ते का उम्मीद है आपको समय पर
मालदी ही मिलेंगे ।

~~आपका~~

आगा बेदा ^{जी} ~~मन~~ से मिलें तो मेरी याद दिलाएँ ।

आपका,

जा

S.H. RAZA

101, RUE DE CHARONNE

2, CITÉ DU COUVANT

75011 PARIS

TÉL. 370-97-64

Paris, 15th February 1981.

सम्पादक -
"प्रकाश संस्थान"
216 श्रीराम नगर,
शाहदरा
दिल्ली 11 00 32.

प्रिय सम्पादक जी -

श्री वेदरवाध सिंह का कविता संग्रह : "जमीन पक रही है,"
म्या आप के पते पर पैरिस भिजा सकेंगे।

बड़ी तकलीफ हो रही है और चाहता हूँ कि आप इसे हवाई डाक
से ही भिजा सकें और आपका बिल भी जिसे मैं फौरन ही प्रभार
के साथ पोस्टल मनि आउट या चेक पैसे भिजाऊँगा। निन्दनी

निन्दनी मैं ~~युद्ध रंगों से प्यार है मैं चित्र बनाता हूँ और वह कशिश~~
~~अन कवियों से अहसास कर पाता हूँ अहसास करता हूँ जो श्री के. तं~~
~~के शब्दों के आधर से इस इतनी शक्ति और चालता से कर~~
~~कर ले हूँ।~~

इसी प्रतीक्षा में, ~~अ~~

आभार सहित

वेदरवाध

S.H. RAZA

101, RUE DE CHARONNE
2, CITÉ DU COUVENT
75011 PARIS

TÉL. 370-97-64

Paris, 15th February 1981.

Shri M.V. Athawale - Nagpur

Respected Gurugi.

Your last two letters ~~did reach~~ ^{were received} me in time. I ~~am~~ ^{was} glad that the ~~my~~ m.o. reached you. It's nothing my dear & respected Gurugi, in relation to your kindness towards me when I was ~~so~~ small & fragile ~~under your care~~ ^{during the years} in 1939-42. ~~under your care~~. & my really wish I can do more. gave me guidance & affection. I really wish I can do more at present. ~~is hard~~
The ^{higher} competitive ~~and~~ ^{hand} demanding life of Europe keeps me busy. ~~However~~ Apart from that my inner demands of self expression are ~~equally~~ there's a nice climate for my work at present here & I am flooded with invitations. I hope I will have a clear sight. A poster for Unesco is in view on the theme of Peace. "Sitter" the need of the time, which I am ~~working~~ ^{working} with in all sincerity. ~~crystal~~
Your letters in Marathi were ~~very~~ ^{crystal} clear for me. I have hard work in store for me this year, but who knows I can come again. Till then please take care of your health. I must see you again in good form.

With gratitude & all my respect

पेरिस, ३ अप्रैल १९८१
३. ४. १९८१.

प्रिय अशोक -

गानिन लकेशा कहती रहती है,
"तुम इतने लम्बे पत्र लिखते हो,
अशोक जी को इन्हे पढ़ने का
समय भी नहीं।"

इसी लिये सब से छोटा पत्र लिख
रहा हूँ।

यूनेस्को पोस्टर "शान्ति" पर,
हट किताबी को बेहद पसन्द आया,
पर लगता है, अप्रकाशित ही रहेगा।

गीता आसल नहीं है, कि भी सारी शक्तियाँ (शूक्तों से)
के साथ गीता चाहती है।

मोपाल थ्युजियम के खबर और मेरे... भावों
के पत्र के गवाह के इन्तजार में -

आपका [सु]

मोपाम
20 अप्रैल 1981

आदरणीय- रज़ा सा.

गुलाम,

आपका दूसरा पत्र ~~आ~~ अभी ही पाया हुआ है, इससे पहले कि कुछ लिख सकूँ लिख पाने की स्थिति में आने के लिये समय मारा।

शब्द तो नहीं हैं कुछ भी वह पाने को, लेकिन बाद में, वही बहुत अधिक बाद तो उस सही कि - मैंने देखे तो नहीं, जानता भी नहीं लेकिन फरिश्ते यदि होते हैं इस धरती पर तो शायद ऐसे ही होंगे। मैं बहुत खुश हूँ। आपके पहले पत्र को पाने के ही बाद से तो मैं शक्ति और विश्वास से भर गया था, और दूसरे ने तो... उस आखिरी मर दी हम दोनों की, वंदना पास ही बैठी है। व्यर्थ और साधन के साथ अपनी राह पर हूँ, मेरे साथ हैं आपके पत्र आपके विचार और हैं वे पुराने गंधों की जिन्दे वचन में मैं वहानियों कि तरह पढ़ गया होऊँगा, नये-सिरे और ^{नई} भावनाओं के साथ उन्हे ^{फिर से} टोपना शुरू कर दिया है

देने में तो कोई बसर नहीं रही है आपके

नामूना नहीं कि मैं कितना पाप कर रहा हूँ।
लेकिन उसन हूँ कि आप मेरे अपने सुन-से
भी बहुत पास-हैं मेरे।

मेरी चिंता अब आप बिजबुन छोड़ दीजिये
मैं बहुत बीम हूँ उसन हूँ। आपका बीमती
समय का अहसास है मुझे क्योंकि वो मेरे ही
नहीं आने वाली पीढ़ियों के हिस्से में भी आने
वाले हैं। थोड़ा सा उपेक्षित ही रह कर "मुझे" पाने
दा, नहीं तो मुझरे बगैर जिन्दा रहना मुश्किल
हो जायेगा।

आप चम रहा है अभी खचन न होने वाला
आप। मैं जानता हूँ कि मेरे लिये उसकी सार्वभौमता
उसके होते रहने ही में है। आगे क्या होगा, नहीं नामूना
न ही जानने की इच्छा है। जानता हूँ तो बस
इतना ही कि क्या कर रहा हूँ।

अभी अशोकजी से मेरी मुलाकात नहीं हो पाई
कल या परसों सुबह जाऊंगा। (गंगीत कला संगम का
बसंत बहार प्रोग्राम आजकल चल रहा है। नामरेव मजे
में है।

बंदना और मेरा जेनि-माला का युग।

23/3

Sachida Nandan

PARA, February, 18, 1981 -

प्रिय सचिदा -

आज तो - देर से - तुम्हारा आग (का) मिला । इससे पहले
तब लिख सका । बेहद गससफ़ रहा हूँ । फिर भी चाहता हूँ कि
ये दो शब्द, तुम्हारे आपन जाने के पहले, तुम्हें मिल सकें ।

मेरी दुआएँ और सारी शुभकामनाएँ, तुम्हारी ओसफ़ा
मकशिन के लिये ।

"जैसे इतकर काम करा रहे" वस यही मेरी समझ है ।
वातवरण कैसा भी हो, इसी मंच में हमारी कामयाबी की
बुनबाद है ।

नली, भुवनी, मोट का आग । जैसे काम करवा है
साथ मिलकर - प्रदेश में - देश से मध्य में ही बहुत
कुछ हो रहा है । ओपन कला केन्द्र बन रहा है और पीपल
को हमारी महारत है । बूंद बूंद की तरह मिलकर लगे बनाने
हैं, करना, फिर नदी और एक दिन - सागर । मुझे यकीन है ।

पीपल के बड़ी हन्ड / वफ़ा जाड़ा कहिलायो । फिर भी काम
के लिये वातवरण अच्छा है । देश से लोग आते रहते हैं और आप
साथ के स्नेह से जिन्दगी सस्य मगती है । इसी बीच मकाश और
भूकण्ड के संगीत से चला आइ । फिर लोगों के आसता अब केई
दिलचस्पी कहीं मगती ।

वस आज इतना ही ।

सलोक - ईदर रजा

Paris, 15th April, 1981.

प्रिय सुरेश-

तुम्हारे दुखी पत्र से कुछ ऐसी तकलीफ
हुई है, कि फिर से लिख रहा हूँ।

फिर भी आशा है कि मेरे पिछले पत्र से कुछ फिलासा
तो तुम्हें मिला होगा। मैं अधिक तो कुछ न लिख
सका, अपना स्नेह और अपना विश्वास तुम्हारे कान
में, पूरी सचाई और सादगी से भिजाया इसी आशा
में कि तुम पढ़ते हो - पूरे दिल से मुसकरा सको।
तुम्हें कुछ विश्वास हो सके कि तुम्हारी शक्ति तुम्हारे
चित्रों में है और प्रदेश को, देश को इसे मानना
ही पड़ेगा। और तुम्हें भी इस कार्य को जो प्रबलता
से शुरू हुआ है, और आज बढ़ता है।

हमें जीना है हमारी पूरी शक्तियों से। धैर्य से
साहस से, अपनी संकल्पनाओं को समझना है। बुद्धि से
तर्क से, विश्लेषण से, बोध से - अपने पुराने शत्रुओं
का सहाय लेते हुए। विश्वास बीजिये विदेश में भी
भयंकर कठिनाइयों में, तुम्हें इसी से पुनर्जन्म मिला,
प्रेरणार्थ मिली है।

तुम्हारे पत्र का इन्तजार है। पूरा समाचार देना। यहां
हमेशा भी तरह बेहद काम - जिस में डूब और कुछ साथ
साथ रहते हैं।

मानिन और मेरे ओर से, तुम्हें और बंधन को
लौह।

र.जी

हवाई पत्र
AEROGRAMME



Mr. S. H. RAZA

101 RUE DE CHARONNE

TO CITE DU COUVENT

75011 PARIS

FRANCE



पहला मोड़
FIRST FOLD

दूसरा मोड़
SECOND FOLD

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये
NO ENCLOSURES ALLOWED

भेजने वाले का नाम और पता
SENDER'S NAME AND ADDRESS

SURESH CHOUDHARY

19/24 North T.T. Nagar
BHOPAL - M.P.

INDIA

पिन PIN 462003

भारत INDIA

आदरणीय राजा सा.

सादर प्रणाम.

लो फाल -
19 मार्च - 1981

क्या लिखूँ क्योकि आपकी उपस्थिति
का अहसास तो हम सदा मेरे ही पास होता है प्रेरणा
देते हुये। आपसे बातें करता रहता हूँ स्वप्न स्वप्न कि
लिखना कुछ भी गया नहीं लगता सब कुछ तो
आपको कहा हुआ होता है। यह सब मेरी मौन
उन्नति के लिये बेहतर नहीं है। भुखर होता
आवश्यक है ? मायूम नहीं। बहुत सी कमजोरियाँ
हैं। ~~अ~~ अहसास नहीं ~~है~~ एकाएक हो पाता
है भुखे, वक्त जब गुजर जाता है तो
हल्की सी टीस छोड़ जाता है। क्या है ?
क्यो है ? मैं कुछ छोड़ रहा हूँ

भुखे रास्ता दो भुखे रास्ता दो

भुखे रास्ता दो

मैं न मायूम कहाँ मरवा गया हूँ

मेरा व्यवहार - मेरे सम्बन्ध - मेरे दोस्त - वे...

~~क्या मैं एक ही जगह रहूँगा~~

कुछ समझ में नहीं आ रहा ?
आपका.

23/3